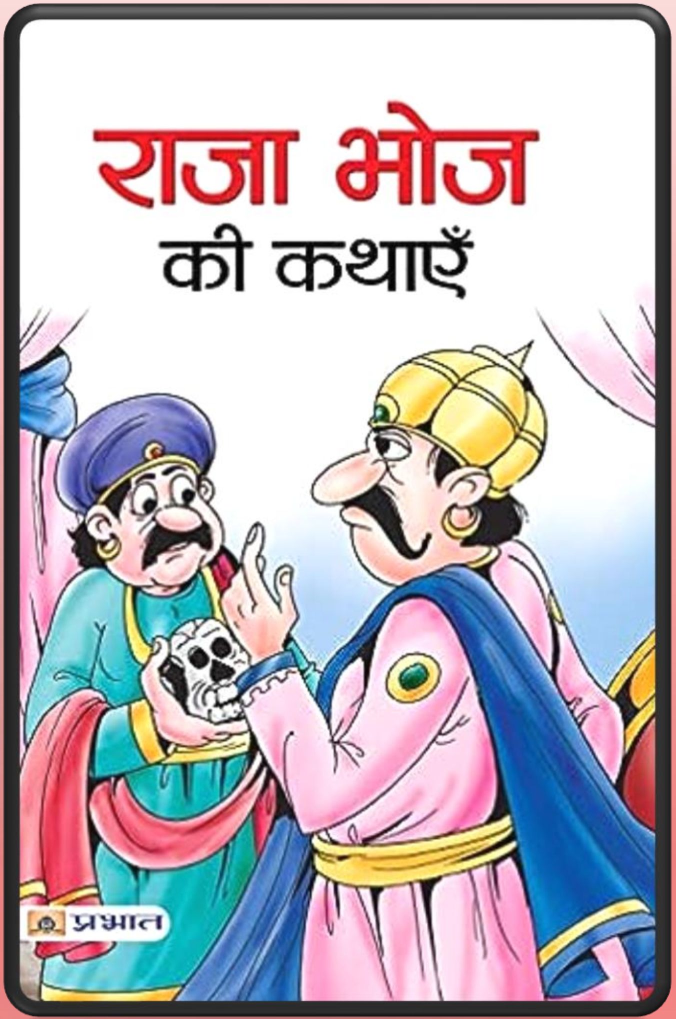

HB2897 -राजा भोज की कथाएं

कुमार प्रफुल्ल

भारतीय इतिहास में सर्वाधिक लोकप्रिय राजाओं की अग्रिम पंक्ति में अपनी पहचान बनानेवाले राजा भोज को भला कौन नहीं जानता! सहनशीलता, दयालुता, न्यायिप्रय, प्रजापालक, वीर, प्रतापी आदि गुणों के स्वामी राजा भोज की वीरता, साहस और न्यायप्रियता की कहानियाँ आज केवल भारतवर्ष में ही नहीं अपितु संपूर्ण विश्व में प्रचलित हैं। कहा जाता है कि राजा भोज अपने काल के लोकनायक के रूप में भी विख्यात हो चुके थे। उनके जीवन से जुड़ी कहावत 'कहाँ राजा भोज-कहाँ गंगू तेली' बहुत लोकप्रिय है। इस कहावत के पीछे राजा भोज के जीवन से जुड़ी अनेक कथाएँ प्रचलित हैं।

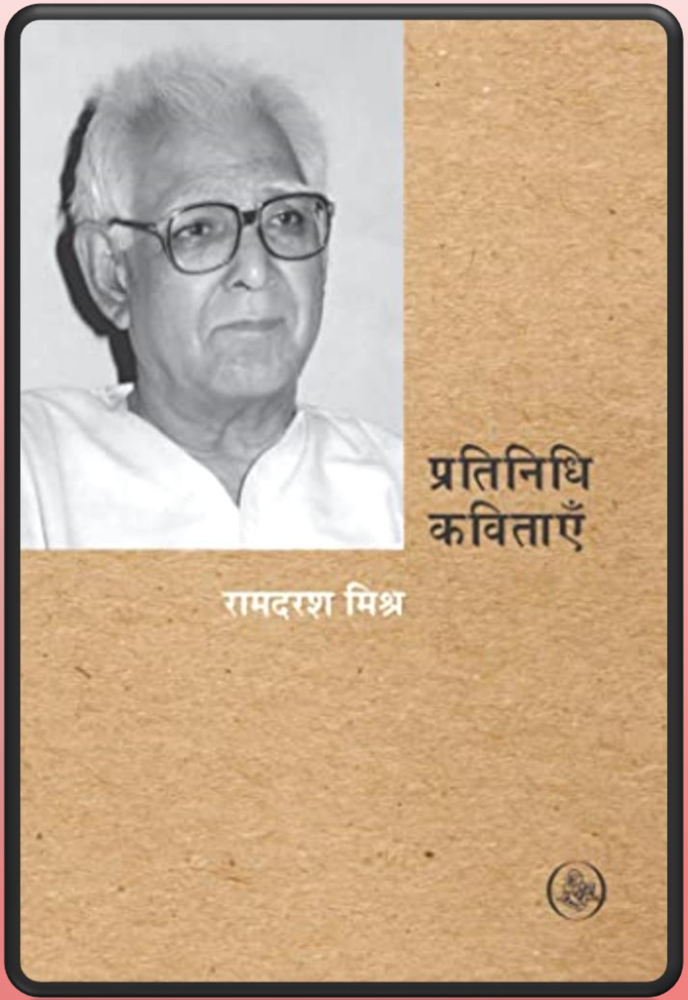

HB2933 - प्रतिनिधि कविताएँ

रामदरश मिश्र

रामदरश मिश्र हिन्दी के प्रतिष्ठित साहित्यकार हैं। ये जितने समर्थ कवि हैं उतने ही समर्थ उपन्यासकार और कहानीकार भी हैं। रामदरश मिश्र की लंबी साहित्य-यात्रा समय के कई मोड़ों से गुजरी है और नित्य नूतनता की छवि को प्राप्त होती गई है। कविता की कई शैलियों जैसे गीत, नई कविता, छोटी कविता, लंबी कविता में उनकी सर्जनात्मक प्रतिभा ने अपनी प्रभावशाली अभिव्यक्ति के साथ-साथ ग़ज़ल में भी उन्होंने अपनी सार्थक उपस्थिति रेखांकित की। इसके अतिरिक्त उपन्यास, कहानी, संस्मरण, यात्रावृत्तांत, डायरी, निबंध आदि सभी विधाओं में उनका साहित्यिक योगदान बहुमूल्य है।'साहित्य अकादेमी पुरस्कार', 'उदयराज सिंह स्मृति सम्मान' सहित कई सम्मानों से सम्मानित।

उनकी कुछ मुख्य कृतियाँ हैं : 'हिन्दी समीक्षा : स्वरूप और सन्दर्भ : एक अन्तर्यात्रा', 'हिन्दी कहानी : अन्तरंग पहचान'; 'आज का हिन्दी साहित्य : संवेदना और दृष्टि'; 'छायावाद का रचनालोक'।

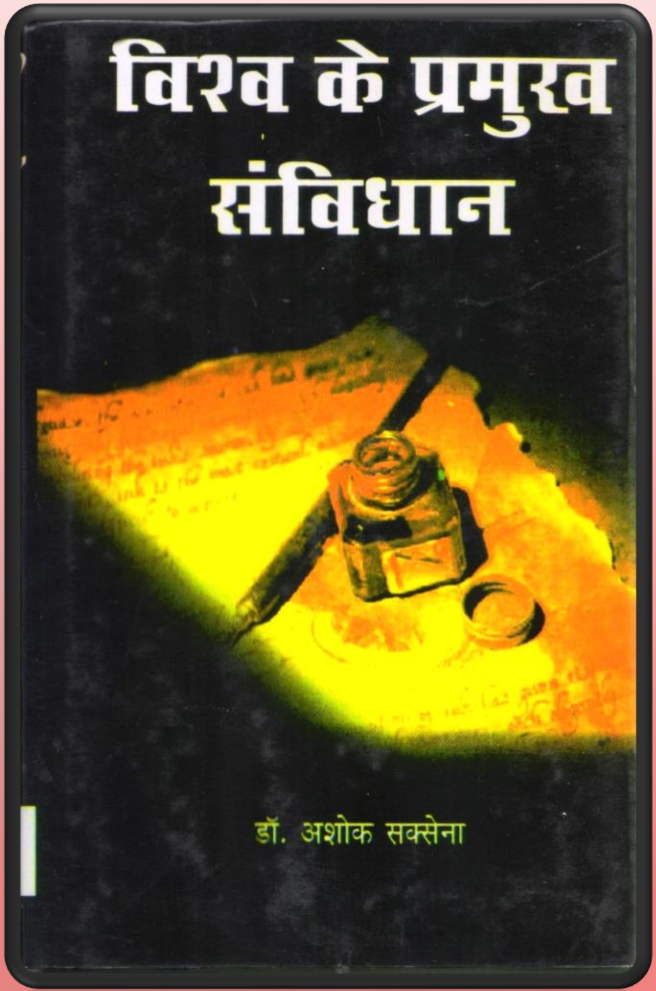

HB2915 - विस्व के प्रमुख संविधान

डॉ. अशोक सक्सेना

'संविधान' शब्द का आशय कुछ भी माना जाए किंतु मूल वस्तु यह है कि किसी देश के संविधान का पूर्ण अध्ययन केवल कुछ लिखित नियमों के अवलोकन के संभव नहीं। कारण, यह तो शासन प्रबन्ध सम्बन्धी अनुशासन का एक अंश मात्र होते हैं। संपूर्ण संवैधानिक परिचय शासनप्रबंधीय सब अंगों के अध्ययन से ही संभावित हो सकता है।
प्रस्तुत पुस्तक को हर दृष्टि से उपयुक्त बनाने का प्रयास किया गया है। पुस्तक की भाषा सरल रखी गई है।

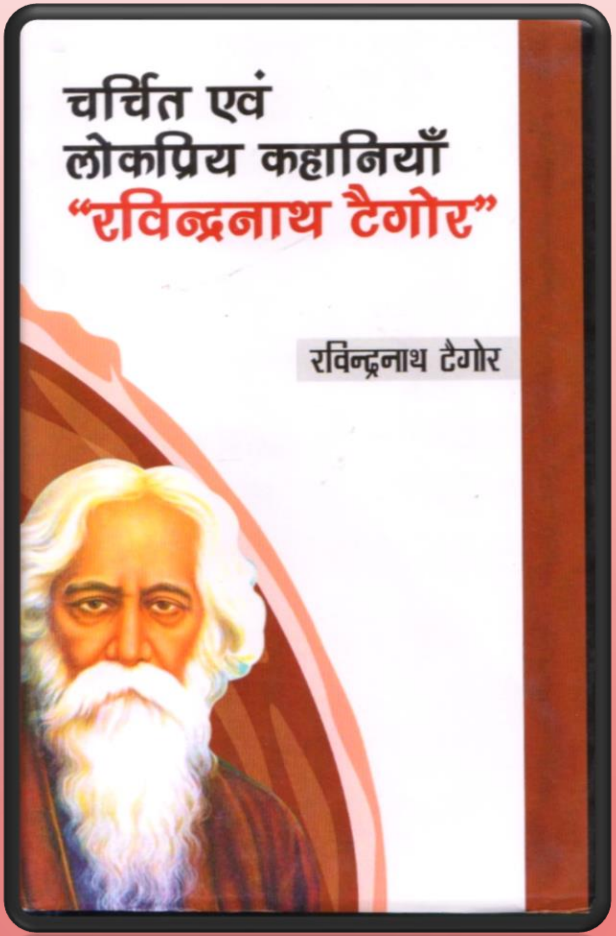

HB2923 - चर्चित एवं लोकप्रिय कहानियाँ ‘रबीन्द्रनाथ टैगोर’

रबीन्द्रनाथ टैगोर

रबीन्द्रनाथ ठाकुर एक विश्वविख्यात कवि, साहित्यकार, दार्शनिक और भारतीय साहित्य के नोबेल पुरस्कार विजेता हैं। उन्हें गुरुदेव के नाम से भी जाना जाता है। बांग्ला साहित्य के माध्यम से भारतीय सास्कृतिक चेतना में नयी जान फूँकने वाले युगदृष्टा वे ही थे। वे एशिया के प्रथम नोबेल पुरस्कार सम्मानित व्यक्ति हैं।

वे एकमात्र कवि हैं जिसकी दो रचनाएँ दो देशों का राष्ट्रगान बनीं - भारत का राष्ट्र-गान 'जन गण मन' और बाँग्लादेश का राष्ट्रीय गान 'आमार सोनार बांङ्ला' गुरुदेव की ही रचनाएँ हैं।

उन्होंने एक दर्जन से अधिक उपन्यास लिखे। इनमे चोखेर बाली, घरे बहिरे, गोरा आदि शामिल है। उनके उपन्यासों में मध्यम वर्गीय समाज विशेष रूप से उभर कर सामने आया।

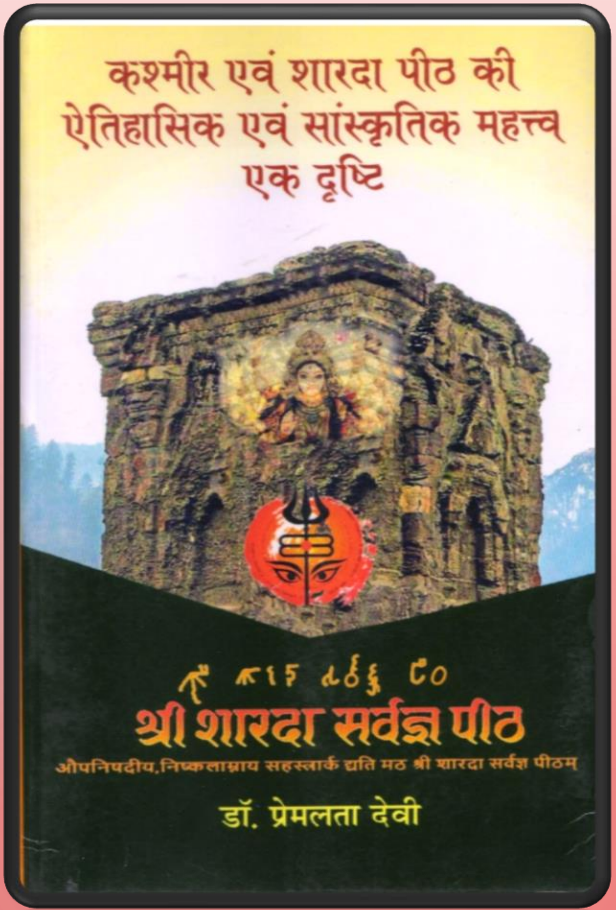

HB2907- कश्मीर एवं शारदा पीठ की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक महत्त्व एक दृष्टि

डॉ प्रेमलता देवी

यह पुष्तक कश्मीर घाटी के प्राचीन इतिहास पर शोध परक तथ्य को उदघाटित करते हुए वहां की संस्कृति, कला, शिल्प एवं लोकजीवन पर एक विहंगम दृस्टि डालती हैं। विशेस्कर कश्मीरी शैवागम पर लेखिका की अद्भुत विवेचना स्वाध्याय की प्रखर प्रतिभा को आलोकित करती हैं। इसी प्रकार नैपथ्य में चले जा चुके भारतीय ज्ञान परंपरा के शीर्षथ केंद्र रहे चुके शारदा सर्वज्ञ पीठ की पुनर्स्थापना का उनका प्रामाणिक प्रयास निश्चित रूप से श्लाघनीय हैं। मूल रूप से यह पुष्तक कश्मीर के प्रति रूचि रखने वाले पाठको की जिज्ञासा को तुष्ट करेगी।